सबटरापिकल सिंचित क्षेत्रों में गेहूँ की जैविक खेती (किस्म ओ डबलयू **171 )**

श्स्य विज्ञान केंद्र

विधि

- प्र्यापत नमी में खेती की तैयारी शुरू करें। एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो बार हैरो से जुताई करके पाटा लगाए। भूमि की तैयारी से पहले, अच्छी सडी हुई 30 कविंटल / हेकटर गोबर की खाद खेत में डालें।
- ट्राईकोडर्मा हारजिनियम और सीडोमोनास फ्लोरसेन्स @ 5 कि.ग्रा. / हेकटर जैसे जैविक जीवो को मृदा सुधारको के रूप में प्रयोग करें।

- गेहूँ की बुवाई नवंबर माह के तीसरे सप्ताह में 100 कि.ग्रा. बीज / हेकटर के दर से 20 से.मी. लाइन से लाइन की दूरी पर करें।
- खेत में कैंचुए की खाद का बिखराव @ 10 कविंटल / हेकटर जनवरी के दूसरे सप्ताह में करें।
- दो बार गौं मुत्र (10% Conc.) का छिडकाव जनवरी के दूसरे और फरवरी के तीसरे सप्ताह में करें।
- मार्च माह के पहले सप्ताह में 15 से 20 दिन पुरानी लस्सी @ 5 लि. और केचुंए की खाद का मिश्रण (1:1),100 लि. पानी में घोल बनाकर प्रयोग करें।
- मार्च के तीसरे सप्ताह में गेहूँ के पीलीया के प्रबंध के लिए 10% बैसिलस सबटिलिस का छिडकाव करें।
- आवश्यकता अनुसार सिचांई करें जिसे भूमि में नमी बनी रहे।

लाभ / प्रभाव

- मृदा में सुधार होता है ।
- फसल में अच्छे दाने होने के कारण अधिक मुद्रा लाभ होता है ।

नोटः

1.धान और गेहूँ की प्रथम वर्ष पैदावार जैविक कृषि के कारण कम रहती है। फसल की पैदावार बढने और स्थिर रहने के लिए लगभग 3 वर्ष का समय लगता है।

2. लाभः व्यय अनुपात में तीन साल बाद सुधार होता है।